रविवार 26 जुलाई, 2020

विषय — सत्य

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 119 : 151

"हे यहोवा, तू निकट है, और तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 119 : 18, 44-47, 160

18 मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।
44 तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार, सदा सर्वदा चलता रहूंगा;
45 और मैं चोड़े स्थान में चला फिरा करूंगा, क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है।
46 और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूंगा, और संकोच न करूंगा;
47 क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूं, और मैं उन से प्रीति रखता हूं।
160 तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 45 : 18 (यों), 19

18 … क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उसने उसे सुनसान रहने के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये उसे रचा है वही कहता है, मैं यहोवा हूं, मेरे सिवा दूसरा और कोई नहीं है।
19 मैं ने न किसी गुप्त स्थान में, न अन्धकार देश के किसी स्थान में बातें कीं; मैं ने याकूब के वंश से नहीं कहा, मुझे व्यर्थ में ढूंढ़ो। मैं यहोवा सत्य ही कहता हूं, मैं उचित बातें ही बताता आया हूं॥

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. नीतिवचन 30 : 5

5 ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है।

3. II राजा 6 : 8 (वह)-17

8 ...अराम का जाजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति कर के अपने कर्मचारियों से कहा, कि
अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी।
9 तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से हो
कर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करने वाले हैं।
10 तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा कर के परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेज
कर, अपनी रक्षा की; और उस प्रकार एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ।
11 इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; सो उसने अपने कर्मचारियों को बुला कर उन से
पूछा, क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक
कर्मचारी ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं,
12 एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू
शयन की कोठरी में बोलता है।
13 राजा ने कहा, जा कर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेज कर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। और उसको यह
समाचार मिला कि वह दोतान में है।
14 तब उसने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर
लिया।
15 भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकल कर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत
एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?
16 उसने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।
17 तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने सेवक
की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़
अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है।

4. भजन संहिता 25 : 2, 4, 5, 14, 15

2 हे मेरे परमेश्वर, मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है, मुझे लज्जित होने न दे; मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने
न पाएं।
4 हे यहोवा अपने मार्ग मुझ को दिखला; अपना पथ मुझे बता दे।

5 मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूं।
14 यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा।
15 मेरी आंखे सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पांवों को जाल में से छुड़ाएगा॥

5. यूहन्ना 4 : 21 (यीशु कहा) *केवल*, 23 (वह), 24

21 यीशु कहा...
23 ... वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है।
24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

6. यूहन्ना 8 : 31, 32

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

7. 1 यूहन्ना 2 : 1 (*से 1st* ,), 3 (इसके द्वारा)-5 (*से* :), 6, 21, 22, 26, 27

1 हे मेरे बालकों।
3 ... यदि हम उस की आज्ञाओं को मानेंगे, तो इस से हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं।
4 जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उस की आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उस में सत्य नहीं।
5 पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है।
6 सो कोई यह कहता है, कि मैं उस में बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।
21 मैं ने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिये, कि उसे जानते हो, और इसलिये कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं।
22 झूठा कौन है? केवल वह, जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है।
26 मैं ने ये बातें तुम्हें उन के विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं।

27 और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उस की ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इस का प्रयोजन नही, कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन जैसे वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं: और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उस में बने रहते हो।

8. 2 कुरिन्थियों 6 : 1, 4-7

1 और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो।
4 परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों की नाईं अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दिरद्रता से, संकटो से।
5 कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से।
6 पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से।
7 सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ से; धामिर्कता के हथियारों से जो दाहिने, बाएं हैं।

9. भजन संहिता 33 : 4

4 क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है; और उसका सब काम सच्चाई से होता है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 180 : 25-30

जब मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित होता है, सभी चीजों को समझने वाला वर्तमान मन मनुष्य जानता है कि भगवान के साथ सभी चीजें संभव हैं। इस जीवित सत्य का एकमात्र तरीका, जो बीमारों को चंगा करता है, ईश्वरीय मन के विज्ञान में पाया जाता है जैसा कि मसीह यीशु ने सिखाया और प्रदर्शित किया है।

2. 224 : 28-4

सत्य स्वतंत्रता के तत्वों को लाता है। इसके बैनर पर आत्मा से प्रेरित आदर्श वाक्य है, "गुलामी को समाप्त कर दिया गया है।" भगवान की शक्ति कैद में उद्धार लाता है। कोई भी शक्ति दिव्य प्रेम का सामना नहीं कर सकती। यह कौन सी शक्ति है, जो स्वयं ईश्वर का विरोध करती है? यह किसके साथ आता है? वह कौन सी चीज है जो

मनुष्य को पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए लोहे की छड़ से बांधती है? जो कुछ भी मनुष्य को गुलाम बनाता है वह ईश्वरीय सरकार का विरोध करता है. सत्य ही मनुष्य को मुक्त बनाता है।

3. 454 : 4-13

अपने छात्रों को सत्य की सर्वशक्तिमानता सिखाएं, जो त्रुटि की नपुंसकता को दर्शाता है। एक अंश में भी, परमात्मा की समझ से सारी शक्ति भय को नष्ट कर देती है, और यह सच्चे मार्ग में पैर रखता है, — वह मार्ग जो बिना हाथों के बने घर की ओर जाता है "आकाश में अनन्त।" मानव घृणा का कोई वैध जनादेश नहीं है और न ही कोई राज्य है। प्रेम में उत्साह होता है। उस बुराई या पदार्थ में न तो बुद्धिमत्ता है और न ही शक्ति, पूर्ण क्रिएचरियन विज्ञान का सिद्धांत है, और यह महान सत्य है जो त्रुटि से सभी भेस को अलग करता है।

4. 24 : 4-10

मूल ग्रंथों से परिचित होना, और मानवीय मान्यताओं को छोड़ने की इच्छा (पुरुषों के सबसे खराब जुनून द्वारा पदानुक्रम, और उकसाने वाली मान्यताओं द्वारा स्थापित किया गया), वे क्रिश्चियन साइंस को समझने के लिए रास्ता खोलते हैं, और बाइबल को जीवन का चार्ट बनाते हैं, जहां सत्य के संरक्षण और उपचार धाराओं को इंगित किया गया है।

5. 480 : 26-5

बाइबल घोषणा करती है: "सब कुछ उसी के [दिव्य वचन] द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" यह दिव्य विज्ञान की शाश्वत सत्यता है। यदि पाप, बीमारी, और मृत्यु को कुछ भी नहीं समझा जाता, तो वे गायब हो जाते। जैसे सूरज से पहले वाष्प पिघलती है, वैसे ही अच्छाई की वास्तविकता से पहले बुराई गायब हो जाएगी। एक को दूसरे को छिपाना चाहिए। कितना महत्वपूर्ण है, फिर, वास्तविकता के रूप में अच्छा चुनना! मनुष्य ईश्वर, आत्मा, और कुछ नहीं के लिए सहायक है। ईश्वर का होना अनंत, स्वतंत्रता, सद्भाव और असीम आनंद है। "और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।"

6. 481 : 9-12

भौतिक इंद्रियों द्वारा मन के विज्ञान के विभिन्न अंतर्विरोध अनदेखी सत्य को नहीं बदलते हैं, जो हमेशा के लिए बरकरार रहता है।

7. 128 : 27-6

विज्ञान का संबंध माइंड से है, भौतिक से नहीं। यह निर्धारित सिद्धांत पर टिकी हुई है न कि झूठी सनसनी के फैसले पर। गणित में दो योगों का जोड़ हमेशा एक ही परिणाम लाना चाहिए। तो क्या यह तर्क के साथ है। यदि एक नपुंसकता के दोनों प्रमुख और मामूली प्रस्ताव सही हैं, तो निष्कर्ष, यदि ठीक से खींचा गया है, तो गलत नहीं हो सकता। इसलिए क्राइस्टियन साइंस में न तो कोई मतभेद है और न ही विरोधाभास, क्योंकि इसका तर्क उतना ही सामंजस्यपूर्ण है जितना कि सटीक रूप से बताए गए नपुंसकता के तर्क या अंकगणित में एक उचित गणना योग है। सत्य कभी सत्य होता है, और आधार या निष्कर्ष में कोई त्रुटि बर्दाश्त नहीं कर सकता।

8. 367 : 30-32

क्योंकि सत्य अनंत है, त्रुटि को कुछ भी नहीं के रूप में जाना जाना चाहिए। क्योंकि सत्य अच्छाई में सर्वशक्तिमान है, त्रुटि, सत्य के विपरीत, कोई शक्ति नहीं है।

9. 183 : 14-15

सत्य ने कभी त्रुटि को आवश्यक नहीं बनाया, और न ही त्रुटि को समाप्त करने के लिए एक कानून बनाया।

10. 368 : 4-5, 6-9

सत्य से पहले त्रुटि कायरता है। ... सत्य और त्रुटि दोनों नश्वरता की आशंका से पहले से कहीं अधिक निकट आ गए हैं, और सत्य अभी भी स्पष्ट हो जाएगा क्योंकि त्रुटि स्वयं नष्ट हो गई है।

11. 83 : 6-11

विज्ञान केवल अविश्वसनीय अच्छे और बुरे तत्वों की व्याख्या कर सकता है जो अब प्रकट हो रहे हैं। इन बाद के दिनों की त्रुटि से बचने के लिए मनुष्यों को सत्य की शरण लेनी चाहिए। कुछ भी समझ के बिना अंध विश्वास की तुलना में क्रिश्चियन साइंस के लिए अधिक विरोधी नहीं है, इस तरह के विश्वास के लिए सत्य छुपाता है और त्रुटि का निर्माण करता है।

12. 563 : 1-9

मानव भावना अच्छी तरह से कलह में अचंभित कर सकती है, जबकि, एक दिव्य भावना के लिए, सद्भाव वास्तविक है और असत्य को दूर करता है। हम अच्छी तरह से पाप, बीमारी और मृत्यु पर चकित हो सकते हैं। हम अच्छी तरह से मानव भय पर हैरान हो सकते हैं; और फिर भी घृणा से अधिक चकित, जो अपने हाइड्रा सिर को उठाता है, बुराई के कई आविष्कारों में अपने सींग दिखाता है। लेकिन हमें कुछ भी नहीं करने के लिए क्यों

खड़ा होना चाहिए? महान लाल अजगर एक झूठ का प्रतीक है, - यह विश्वास कि पदार्थ, जीवन, और बुद्धि भौतिक हो सकती है।

13. 178 : 18-22

नश्वर मन, पदार्थ में संवेदना के आधार से कार्य करना, पशु चुंबकत्व है; लेकिन यह तथाकथित दिमाग, जिसमें से सभी बुराई आती है, खुद को विरोधाभास करती है, और अंततः विज्ञान में व्यक्त किए गए शाश्वत सत्य, या दिव्य मन को उपजना चाहिए।

14. 288 : 31-7

शाश्वत सत्य को नष्ट कर देता है जो लगता है कि मनुष्यों ने त्रुटि से सीखा है, और भगवान के बच्चे के रूप में मनुष्य का वास्तविक अस्तित्व प्रकाश में आता है। सत्य का प्रदर्शन शाश्वत जीवन है। नश्वर मनुष्य कभी भी त्रुटि, पाप, बीमारी, और मृत्यु में विश्वास की लौकिक दुर्बलता से नहीं उठ सकता, जब तक कि वह यह न जान ले कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है। यह विश्वास कि जीवन और संवेदना शरीर में हैं, मनुष्य को ईश्वर की छवि के रूप में समझने की समझ से दूर होना चाहिए। तब आत्मा ने देह पर काबू पा लिया होगा।

15. 99 : 23-29

सच्ची आध्यात्मिकता की शांत, मजबूत धाराएँ, जिनमें से अभिव्यक्तियाँ स्वास्थ्य, पवित्रता और आत्म-विनाश हैं, मानव अनुभव को गहरा करना चाहिए, जब तक कि भौतिक अस्तित्व की मान्यताओं को एक गंजेपन के रूप में नहीं देखा जाता है, और पाप, बीमारी, और मृत्यु ईश्वरीय आत्मा के वैज्ञानिक प्रदर्शन और परमेश्वर के आध्यात्मिक, सिद्ध इंसान को हमेशा के लिए जगह देते हैं।

16. 323 : 6-12

प्रेम के उत्तम उदाहरणों के माध्यम से, हमें धार्मिकता, शांति और पवित्रता की ओर अग्रसर होने में मदद मिलती है, जो विज्ञान के स्थल हैं। सत्य के अनंत कार्यों को निहारते हुए, हम विराम देते हैं, - भगवान की प्रतीक्षा करें। तब हम आगे की ओर धकेलते हैं, जब तक कि असीम विचार चलता नहीं है, और गर्भाधान से अपरिभाषित दैवीय महिमा तक पहुंचने के लिए पंख लगा हुआ है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6